Vol 3 Issue 4 Jan 2014

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

मुक्ता कृत 'एक आंसू' काव्य–संकलन में चित्रित समस्याएं

अनिल कुमार

सारांश :

'एक आंसू' मुक्ता कृत काव्य–संग्रह है। यह काव्य–संग्रह सूर्यप्रभा प्रकाशन नई दिल्ली से वर्ष 2009 में प्रकाशित हुआ। 'एक आंसू' इनकी चौथी कृति है। 'एक आंसू' में 125 पृष्ठ हैं, जिसमें कुल 68 कविताएं हैं। 'एक आंसू' काव्य रचना एक ऐसी कृति है जिसमें आधुनिक समाज में पश्चिमी जीवन शैली का अंधानुकरण हो रहा है। सुख भोग को ही जीवन का उद्देश्य समझा जाता है और जिसके फलस्वरूप समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियां जन्म लेती हैं। इनकी कविताओं को पढ़ने के बाद सामाजिक रूप से पाठक यह सोचने पर विवश हो जाता है कि उसका समाज, उसका परिवार, उसके सम्बन्धी किस दिशा में जा रहे हैं, उसका परिणाम कितना भयानक है? संयुक्त परिवारों के टूटने से, रिश्तों के बंधनों को नकारने से, मर्यादाओं और जीवन मूल्यों की अवहेलना से, अतृत्त भोग–लिप्सा के कारण परस्पर सम्बन्धों में तनाव, कटुता, अनैतिकता हिंसा बढ़ रही है।

प्रस्तावना :

भाई–भाई के रिश्ते में कटुता आ रही है, बड़े–बूढ़ों, माँ–बाप को अपमानित किया जा रहा है। उन्हें वृद्धाश्रमों में रहने के लिए विवश कर रहे हैं, ऐसे परिवारों की इस प्रकार की और ऐसी ही कुछ अन्य घटनाओं का वर्णन मुक्ता ने अपनी कविताओं में किया है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मुक्ता प्रत्येक घटना की स्वयं साक्षी हैं। 'काश' में खुशियां तलाशती कवयित्री समर्थ्यहीन और 'ओल्ड होम' में वर्तमान रिश्तों की कच्ची डोर को टूटते देख भीगी आंखों को पोंछने को विवश है। मुक्ता के काव्य में बहुत–सी सामाजिक, पारिवारिक इत्यादि समस्याएँ देखने को मिलती हैं। 'एक आंसू' में संस्कृति के बदलते रुपों–प्रतिरुपों की अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई है–

1.1 भ्रूण हत्या

मुक्ता ने भ्रूण हत्या पर कई कविताएँ लिखी है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयत्न किया है। जो लोग बेटियों को बोझ समझते हैं, उन्हें जन्म से पहले ही मार देते हैं। जो उन पर अत्याचार करते हैं, इतना ही नहीं उन्हें जन्म लेने से पहले ही मार डालते हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक ऐसा ही हो रहा है। प्राचीन काल में टेक्नॉलाजी ना होने कारण बेटी के जन्म होने के बाद उसे मार दिया जाता था परन्तु आज आधुनिक युग में विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि अब कोख में ही पता लगा लिया जाता है कि बेटा है या बेटी। यदि बेटी होती है तो उसे जन्म से पहले ही समाप्त कर दिया जाता है। कहने का भाव है कि प्राचीन काल से ही लड़कियों के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है। इसलिए मुक्ता ने अपनी कविताओं में यह समझाने की कोशिश की है कि इंसान यह क्यों भूल जाता है कि बेटी घर की रौनक होती है। सारा संसार चलाने वाली एक स्त्री ही है। अगर उन्हें संसार में जन्म नहीं लेने दिया जाएगा तो यह संसार आगे कैसे बढ़ेगा ? इंसान क्यों भूल जाता है कि बेटी घर की शान होती है। बड़ी होकर पढ़–लिखकर माता–पिता का मान सम्मान बढ़ाती है, जैसे– यदि शिक्षा में अव्वल आए तब भी माता–पिता का नाम रोशन करती है और ससुराल में भी सास–ससुर की सेवा करके, उनका आदर सम्मान करके अपने माता–पिता का नाम रोशन करती है, यदि व्यवसाय करे तो भी माता–पिता का मान सम्मान बढ़ाती है। बेटी के बिना धरती बंजर होती है। बिना बेटी

के यह संसार कैसे चल पायेगा?

'श्राप' कविता में भी मुक्ता ने कहा है कि एक लड़की जो कभी माँ, कभी बेटी, कभी पत्नी के रुप में अपना धर्म निभाती है, दूसरों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करती है। चाहे दुख हो, चाहे सुख जैसे भी हालात हो वह कभी भी उफ तक नहीं करती। उसे जन्म लेने का अधिकार नहीं है। अगर जन्म हो तो उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। अधिकतर इंसान आधुनिक युग में उसे जन्म से पहले ही मार डालते हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार 'श्राप' कविता में स्पष्ट किया है–

"आजकल जन्म से पहले ही किया जाता है
उसके भ्रूण को नष्ट
करने का प्रयास
यदि बच निकली
तो दोयम दर्जे का व्यवहार।"

इस प्रकार मुक्ता ने अपनी कविताओं में भ्रूण हत्या को समाप्त करने पर अत्यधिक बल दिया है।

1.2 दहेज

भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ फैली हुई हैं जो इस समाज के माथे पर कलंक हैं। 'दहेज' समाज की सबसे बड़ी और सबसे भयंकर समस्या है जो और भी अधिक भयंकर बनती जा रही है। समाचार–पत्रों के पृष्ठ उलटिऐ, आपको अनेक समाचार इस प्रकार के पढ़ने को मिलेंगे जैसे– सास ने बहू पर तेल छिड़क कर जला दिया, दहेज लोभियों ने बारात लौटाई इत्यादि। प्राचीन काल से ही लड़की को माता–पिता का घर छोड़कर पति के घर जाना होता है। माता–पिता लड़की के ससुराल वालों को और अपनी लड़की को अपनी खुशी से भेंट दिया करते हैं, धीरे–धीरे यही उपहार दहेज कहलाने लग गए। आज आए दिन कोई न कोई बहू दहेज के लिए मौत के घाट उतार दी जाती है जहां तक वह अपने ससुराल वालों द्वारा दी जा रही यातनाओं से, तानों से परेशान हो आत्महत्या तक कर लेती हैं। आज इंसान धन का इतना लोभी हो गया है कि हर व्यक्ति दहेज की मांग करता है चाहे वह किसी भी रुप में प्राप्त हो। आज इंसान स्वयं पैसे की मांग करता है। यदि पैसा न दिया जाए या दहेज न दिया जाए तो वह लड़की को छोड़ देते हैं। वह मांगने में भी जरा शर्म नहीं करते। 'विवाह बनाम व्यापार' कविता में इसका उदाहरण मिलता है–

"उसके पिता से की गई एक
लाख की मांग
वह बेचारा था असमर्थ और लाचार
मज़दूरी कर बेटी को पढ़ाया
कर्ज लेकर विवाह रचाया।"

इस प्रकार मुक्ता ने अपनी कविताओं में स्पष्ट किया है कि लोग दहेज के लिए लड़कियों पर कितने अत्याचार करते हैं। इंसान इतना लोभी बन गया है कि दहेज के लिए अपनी पत्नी को घर से निकाल देता है क्योंकि वह दहेज नहीं लाती।

1.3 वृद्धाश्रम

मुक्ता ने बुजुर्गों की समस्या पर भी अपनी कविता में स्पष्ट किया है कि किस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों का पालन पोषण करते हैं लेकिन बच्चे बुढ़ापे में उन्हें आश्रम में छोड़ देते हैं क्योंकि वह उन्हें अपने साथ रखना पसन्द नहीं करते। उनका मानना होता है कि वह ओल्ड हैं, वे किसी भी काम के नहीं। बच्चे अपने माता पिता को टूटे पहिए की भांति घर से निकाल फेंकते हैं क्योंकि वह आधुनिक युग में जी रहे हैं। उन्हें अपने माता–पिता की जरूरत नहीं क्योंकि वह ओल्ड हैं और किसी काम के नहीं हैं। वे कोई भी कार्य करने में असमर्थ हैं। इसलिए वह उन्हें घर से निकाल आश्रम में भेज देते हैं। 'ओल्ड होम' कविता में इसका उदाहरण स्पष्ट है–

"अधिकार नहीं उसे घर में रहने का
अपने जिगर के टुकड़ों के साथ
ज़िन्दगी बिताने का, हंसने हंसाने का
क्योंकि वे ओल्ड हैं।"

मुक्ता ने 'एक आंसू' कविता में भी इसका उदाहरण स्पष्ट किया है–

"आज वह मजबूर है

'ओल्ड होम' में रहने को विवश
अब वहीं उसका आश्रय
वहीं उसका घर
जहां नहीं मिलता
अपनों का साथ
स्नेह, प्यार और दुलार।"

कवयित्री ने बताया है कि जिन बच्चों को माता–पिता पालपोसकर बड़ा करते हैं वहीं बच्चे मां–बाप को बोझ समझते हैं। पिता की सम्पति पर पुत्र का अधिकार होता है, उसी सम्पति को प्राप्त कर पिता को घर से बाहर निकाल दिया जाता है। वे 'ओल्ड होम' में रहने पर विवश हो जाते हैं। माता–पिता अपने आप को कोसते हैं लेकिन फिर अगले ही पल अपने पुत्र की सलामती की दुआएं भी मांगते हैं, जिस पुत्र के कारण उन्हें 'ओल्ड होम' में रहना पड़ता है।

माता–पिता अपने बेटे के साथ अपने परिवार में रहना चाहते हैं लेकिन उसकी बहू उनको वहां पर रखना पसंद नहीं करती क्योंकि वह अपने पोते को नमस्कार, राम–राम कहना सिखाते हैं और बहू को यह सब बिल्कुल पसंद नही। वह अपने पति से कहती है कि अपने पिता को वृद्धाश्रम छोड़ आओ नहीं तो हमारे बच्चे जाहिल बन जाएंगे। वह बेटा जिसे मेहनत कर इंजीनियर बनाया आज उसी के घर में अपने पिता के लिए स्थान नहीं। वह उन्हें वृद्धाश्रम छोड़ने की बात करता है क्योंकि वह वृद्ध है, उसके घर में उनके लिए स्थान नहीं।

1.4 अकेलापन

आज का इंसान इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास किसी के लिए समय नहीं यहां तक कि अपने परिवार के लिए भी नहीं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो वह अपनी अलग गृहस्थी बना लेते हैं तो उनके पास अपने माता–पिता के लिए समय नहीं होता उस समय माता–पिता बुढ़ापे में अपने आप को अकेला महसूस करते हैं जो माता–पिता अपने बच्चों के लिए रोज़–रोज़ जीते हैं, रोज़ मरते हैं, वही बच्चे बड़े होकर अपने माता–पिता को अकेला छोड़ देते हैं। उन्हें भूल जाते हैं, उनके लिए उनके पास समय नहीं होता। वह चाहते हैं कि उनके बच्चे उनके साथ रहें। सब इकट्ठे रहे, लेकिन वे बच्चे अपने परिवार के लिए समय नहीं निकाल पाते। माता–पिता को अकेलापन महसूस होता है। ऐसा ही उदाहरण मुक्ता की कविता 'एकांत' में भी मिलता है–

"शून्य दीवारों की ताकत
बंद दरवाज़ों से झांकता
रहता है उसे इंतज़ार
उन अपनों का
जो कभी थे उसका सर्वस्व।"

ऐसा ही एक अन्य उदाहरण "इंसान लौट जाना चाहता है" कविता में मिलता है कि किस प्रकार इंसान अकेलापन महसूस करता है और अपने भाग्य को कोसता है–

"कहाँ..... कहाँ गए वे दिन
जब सब रहते थे उसके साथ,
उसके आस–पास
आज वह अकेला है
उस आशियां में।"

'साथ–साथ' कविता में भी बताया है कि किस प्रकार बच्चे माता–पिता को अलग कर देते हैं। जिन्हें अपने बेटे के पास अकेले ही दुख सहते हुए रहना पड़ता है–

"जहां वह रहता था
अपनी जीवन संगिनी के साथ
परन्तु अब वह रहता है
निपट अकेला
अपने बेटे के साथ
और उसकी हमसफ़र रहती है
दूसरे बेटे के पास।"

इस प्रकार मुक्ता ने अपने काव्य में स्पष्ट किया है कि किस प्रकार माता–पिता अपने ही घर में दुख झेलते हुए रहते हैं। उनको अकेलापन महसूस होता है लेकिन उनके परिवार के सभी सदस्य होते हुए भी वे बेचारे अकेलापन महसूस कर रहे हैं।

1.5 विदेश पलायन

आधुनिक युग में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि वह अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है। जिसके लिए वह विदेश जाने की रुचि अधिक रखता है ताकि वह वहां जा कर अधिक से अधिक धन कमा सके। आज जिसे देखो प्रत्येक व्यक्ति विदेश जाने की लालसा रखता है। माता–पिता जैसे–तैसे कर बच्चों को विदेश में भेज देते हैं। लेकिन फिर भी आज के बच्चे इतने स्वार्थी हैं कि वह अपने स्वार्थ के लिए वह माता–पिता को भी धोखा देने में नहीं चुकते। देखिए–

"अपने बैंक अकाउंट
वह अपने पुश्तैनी मकान को बेच
सब रिश्तों से मुखमोड़
मातृ–भूमि से नाता तोड़
चल दिया था
अपने बेटे के साथ विदेश।"

माता–पिता इतनी मेहनत करके बच्चों को विदेश तो भेज देते हैं लेकिन बाद में पश्चाताप करते हैं। काश वह अपने बच्चे को विदेश न भेजते क्योंकि अंतिम क्षणों में वह अपनी औलाद के साथ अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं लेकिन बच्चे अपने ही परिवार के साथ विदेश में रहते हैं और वापिस लोटने का नाम ही नहीं लेते। माता–पिता अपने बच्चे को विदेश भेज कर पछताते हैं। इसका उदाहरण मुक्ता की कविता 'व्यथित पिता' में इस प्रकार मिलता है–

"काश ! उसने न भेजा होता
अपने कुल दीपक को विदेश
वह भी रहता
अपने परिवार के साथ।"

इस प्रकार मुक्ता ने अपनी कविताओं में बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार आज भी इंसान विदेश जाने की लालसा रखता है और वहां जा कर अपने माता–पिता को भूल अपने परिवार और कार्य में व्यस्त हो जाता है। उसके माता–पिता उसे मिलने को तड़पते रहते हैं।

1.6 धन का बढ़ता प्रभाव

धन की समस्या सबसे बड़ी समस्या है। धन के पीछे इंसान पागलों की तरह भागता है। उसके लिए वह अपनों का खून तक कर देता है। आए दिन समाचार पत्रों में धन संबंधित कई ख़बरें छपी होती हैं। कभी ख़बर होती है कि पोते ने पैसों की खातिर दादी का खून, कभी एक बाप ने पैसों के लिए अपनी बेटी को बेच दिया इत्यादि। इंसान पैसों के लिए अपने ही माता–पिता को घर से निकाल देते हैं। 'एक आंसू' कविता में इसका उदाहरण इस प्रकार है–

"आज उसका खून
हो चुका है सफेद
पाने को सम्पति का एकाधिकार
मर गई उसकी संवेदनाएं।"

इंसान पैसे का इतना लालची हो जाता है कि वह धन के लिए सब कुछ भूल जाता है। पैसे के लिए वह अपना अस्तित्व भूल जाता है। इंसान पूरा जीवन पाप करके धन इकट्ठा करता है। कभी किसी को धोखा देकर पैसा इकट्ठा करता है। धन के लिए रोज़ जीता, रोज़ मरता है। इंसान अपनी सुख–सुविधाएं जुटाने के लिए धन इकट्ठा करता है। 'एकांत' कविता में इसका उदाहरण इस प्रकार स्पष्ट है–

"इंसान पाप आजीवन
संचय करता है धन

जीवन स्तर बढ़ाने को
सुख सुविधाएं जुटाने को।"

'अटूट बंधन' कविता में बताया है कि किस प्रकार माता–पिता अपने और अपने बच्चों के सुख के लिए सम्पति को इक्ट्ठा करते हैं लेकिन आज इंसान इतना लालची हो गया है कि वह अपनों के खून का प्यासा बन गया है–

"हथियाने को जायदाद
हो गया लहू का प्यासा इंसान
बन गया है हैवान।"

आज बच्चे माता–पिता की सम्पति को बेच कर सारा धन अपने अकाउंट में डलवा लेते हैं और अपने पिता को धोखा देकर अकेला छोड़ देते हैं। ऐसा ही उदाहरण 'नियति इंसान की' कविता में कवयित्री ने स्पष्ट करने की कोशिश की है कि किस तरह पैसों की खातिर एक बेटा अपने पिता को धोखा देता है। वह अपने पिता से नहीं दौलत से प्यार करता है। वह अपने पिता का सारा धन ले कर विदेश चला जाता है। किस तरह इंसान पैसों की खातिर कितना गिर सकता है, उसका उदाहरण इस प्रकार है–

"बिकवा दी उसकी सम्पति चल–अचल
विदेशी बैंक में अकाउंट न होने पर
डलवा ली थी सारी राशि
अपने बैंक अकाउंट।"

इसी तरह के अन्य उदाहरण मुक्ता की कई कविताओं में मिलते हैं। 'मानवता अभी जिंदा है' में भी बताया है कि किस प्रकार एक मां पैसों के लिए अपने बेटे को मरवा देती है। उसकी सुपारी के पैसे न दे सकने पर वह पैसों की पूर्ति के लिए अपनी ही बेटी का सौदा कर देती है। इसका उदाहरण इस प्रकार है–

"पैसों की कमी की पूर्ति
कर रही थी वह सौदा कर
अपनी ही बेटी की अस्मत का।"

इस प्रकार मुक्ता ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि किस प्रकार लोग धन के लिए विदेश जाते हैं, कुछ धन कमाने के लिए गलत रास्ते अपनाते हैं, कुछ धन की पूर्ति के लिए अपने ही बच्चों का सौदा कर देते हैं। लोग धन को इतना महत्व देते हैं कि वह सब रिश्तों को भूल जाते है। उसके लिए पैसा ही सब कुछ है।

1.7 भागदौड़ भरी जिन्दगी

समय सबसे बड़ा धन है। समय का हमेशा सदुपयोग करना चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापिस नहीं आता। इसके लिए एक मुहावरा भी प्रसिद्ध है कि 'अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत' कि समय का उपयोग न करने पर बाद में पछताने का क्या फायदा। मुक्ता की कविताओं में भी स्पष्ट है कि आज इंसान इतना व्यस्त है, उसके पास अपनों के लिए समय नहीं, वह हर समय अपने कार्य में व्यस्त रहता है उसके पास अपने ही बच्चों, अपने परिवार के लिए समय नहीं कि वह दो पल साथ बैठकर उनसे बात कर सके। सब उन्नति की राह में बढ़ रहे हैं, मशीनी जीवन जी रहे हैं। 'अटूट बंधन' कविता में इसका उदाहरण स्पष्ट है कि किस प्रकार मनुष्य को किसी की परवाह नहीं। वह भागदौड़ भरी ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा है। मुक्ता ने निम्न पंक्तियों में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है–

"किसी को नहीं, किसी की दरकार
क्योंकि 'टाईम इज़ मनी'
समय नष्ट करने को नहीं किसी के पास
सब भाग रहे हैं।"

इसी तरह मुक्ता ने अन्य कविताओं में भी समय के महत्व को स्पष्ट किया है। इसका उदाहरण 'इंसान लौट जाना चाहता है' कविता की निम्न पंक्तियों में मिलता है–

"हर पल चाहते थे उसका साथ

आज वे व्यस्त हैं
नहीं है समय उनके पास।"

इस प्रकार मुक्ता ने अपनी अन्य कविताओं में भी समय के महत्व को स्पष्ट किया है और बताया है किस प्रकार मनुष्य भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में उलझा हुआ है, मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने ही परिवार के लिए समय नहीं है। जिस कारण वह अपने परिवार को भूलता जा रहा है।

1.8 युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता

आज के आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने विषय में स्वयं सोचना और स्वयं फैसले लेना पसंद करता है। आज का इन्सान इतना स्वार्थी है कि अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है। बच्चे जो माता–पिता की आंखों के तारे होते हैं। माता–पिता जिनके बिना अधूरे होते हैं, माता–पिता जिनकी सलामती के लिए दुआएँ मागते हैं, वही बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो वह अपने मां–बाप से अलग अपने परिवार के साथ रहना पसन्द करते हैं। वह अपने माता–पिता के साथ रहने में शर्म महसूस करते हैं, क्योंकि वह आधुनिक युग में जी रहे हैं वे ;डवकमतदद्ध बन अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। माता–पिता जिन बच्चों को पाल–पोस कर बड़ा करते है वहीं बच्चे सम्पति के लिए अपने मां–बाप के दुश्मन बन जाते हैं। अपने पिता को 'ओल्ड होम' यानि वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। अपने ही माता–पिता से उसी घर में रहने का हक तक छीन लेते हैं जिसके वे मालिक होते हैं। अपने ही बच्चों द्वारा किए जा रहे दुर्वयवहार को देख कभी तो वह अपने आप को बहुत कोसते हैं कि वह कौन सा दिन था जिस दिन इनका जन्म हुआ था। फिर वे सोचते हैं कि काश एक बेटी होती हमारे घर। पुत्र द्वारा इतना बुरा व्यवहार करने पर भी वह अपने पुत्र के लिए दुआएं मांगते हैं कि सदा खुश रहें जहां भी रहें। माता–पिता द्वारा अपने बच्चों के लिए सारे प्रयास असफल और निष्फल हो जाते हैं। इसका उदाहरण मुक्ता की कविता 'एक आंसू' की कुछ पंक्तियों में भी दिया गया है–

"वह उसका पुत्र
जिसे पाने के लिए
उसने की थी दुआएं, मानी थी मन्नतें
रगड़ा था माथ दर–ब–दर
आज वह बेगाना हो गया
अपनों के सुख–दुख
से अंजाना हो गया।"

'प्रेमभाव' कविता में भी इसका उदाहरण मिलता है कि आज के युवकों की मानसिकता किस प्रकार बदल गई है। वह अपने पिता को साथ नहीं रख सकते, उन्हें बोझ समझते हैं–

"तपती दोपहरी में
अपना थैला कंधों पर थामें
स्टेशन की ओर
भारी मन से, भारी कदमों से
क्योंकि उसके बेटे के घर में
नहीं था उसके लिए स्थान।"

जो माता–पिता सारी उम्र अपने बच्चों को पालते–पोसते हैं वहीं बच्चे बुढ़ापे में माता–पिता को बोझ समझने लग जाते हैं। माता–पिता चार बच्चों को पाल सकते हैं पर एक भी बच्चा माता–पिता का बोझ नहीं उठा सकता क्योंकि वे खर्च से डरते है, इसलिए वे माता–पिता को अलग कर देते हैं। बड़े बेटे के पास मां, दूसरे के पास पिता को भेज दिया जाता है क्योंकि वे दोनों उनका एक साथ गुजारा नहीं कर सकते। इसका उदाहरण 'पश्चाताप' कविता में इस प्रकार है–

"वे दोनों कर दिए जाए गए अलग
क्योंकि उनके दोनों बेटे नहीं रख सकते थे उन्हें
उस घर में एक साथ।"

आधुनिक युग में इंसान की सोच बहुत बदल गई है। वे सोचते हैं कि यदि उनके माता–पिता उनके साथ रहेंगे और उनके बच्चे माता–पिता के उनके संस्कार ग्रहण करेंगे तो उन्हें बुरी आदतें पड़ जाएंगी। इसलिए वो अपने साथ न रख कर वृद्धाश्रमों में छोड़ देते हैं या अलग कमरे में बंद कर देते हैं। आज का इंसान सोचता की मैं जो सोचता हूँ, जो

करता हूँ, सब सही है। जहां तक की आज का इंसान अपने रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं को हटा देते है, चाहे उनके माता–पिता क्यों न हों? अपने प्रेम के लिए वह माता–पिता तक का कत्ल कर देते हैं। आज के युवक अपनी जिन्दगी अपने अनुसार व्यतीत करना चाहते हैं वह किसी की दखल अंदाजी पसन्द नहीं करते। इसका उदाहरण 'बदलते रिश्ते' कविता की निम्न पक्तियों में स्पष्ट है। एक बेटी अपने माता–पिता का कत्ल कर देती है क्योंकि वह उसके प्रेम में बाधा थे–

"एक बेटी ने कर दिया कत्ल
अपने माता–पिता का,
विश्वास होता नहीं
बेटी जो है स्नेह की खान।"

आधुनिक युग में प्रत्येक इंसान की सोच इतनी बदल गई है कि उसके लिए रिश्तों की कोई अहमीयत नहीं। माता–पिता पालन पोषण तक ही रह गए हैं। बाद में उनका बच्चों पर कोई अधिकार नहीं। भाई–भाई का दुश्मन है। हर तरफ आतंक फैला हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं। अधिक से अधिक धन कम समय में प्राप्त करना चाहता है। आज सब स्वार्थी हैं, इतने स्वार्थी की सब संबंधों को भूल गए हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार 'अतीत की स्मृतियों' की पंक्तियों में स्पष्ट है–

"भूल गए सब माता–पिता, भाई बहन
रिश्तों के मूल्य,
संबंधों की अहमियत
जीवन में रही नहीं
स्वार्थ में वे अंधे हो गए।"

इस प्रकार मुक्ता ने स्पष्ट करने की कोशिश की है कि आधुनिक युग में युवा पीढ़ी की सोच बहुत बदल चुकी है। सब अपने ही ढंग से सोचते हैं।

1.9 जैनरेशन गैप

आधुनिक युग में इंसान इतना आगे निकल चुका है कि वह अपने प्वाइंट आफ व्यू से सोचता है। जैनरेशन गैप बहुत बढ़ चुका है। इसका उदाहरण 'इंसान लौट जाना चाहता है' कि कविता की निम्न पंक्तियों में दिया गया है–

"आज नहीं रहा उसकी बातों में रस
'जैनरेशन गैप' हावी उन पर
जो हर पांच साल में हो जाता है आजकल।"

आज का इंसान वैज्ञानिक युग में जी रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति की सोच अलग है, क्योंकि उनकी आयु में अन्तर है। पहले सुबह उठकर नमस्कार करना, फिर पूजा पाठ करना आदि किया जाता था लेकिन आधुनिक युग में जैसे–जैसे समय व्यतीत होता गया, शब्दों के रुप ही बदल गए। लोग जितने आधुनिक बनते गए अपने संस्कारों को भूलते गए। वह नए–नए शब्दों का प्रयोग करने लगे। पहले सुबह उठकर बड़ों को प्रणाम करते थे लेकिन जैनरेशन गैप जैसे–जैसे बढ़ता जा रहा है वैसे–वैसे शब्दों के रुप भी बदल गए। आज लोग सुबह उठकर ळववक डवतदपदह कहना पसंद करते हैं क्योंकि आजकल की जैनरेशन नमस्कार की जगह ळववक डवतदपदह बोलना पसन्द करती है। आज हम शिक्षा, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में जैनरेशन गैप देख रहे हैं। पहले लोग अपने परिवार के साथ मिलकर रहना पसन्द करते थे लेकिन आज इंसान अपने तक ही सीमित है। पहले शिक्षा सिर्फ पाठय पुस्तकों तक सीमित थी लेकिन अब शिक्षा का माध्यम इन्टरनेट बन गया है। बच्चे कम्प्यूटर के द्वारा अपनी शिक्षा ग्रहण करते हैं और उनकी खेलें भी कम्प्यूटर में ही खेली जाती हैं। वह दूसरों के साथ नहीं बल्कि अपने ही घर में कम्प्यूटर पर ही खेलते हैं। पहले जब भी कोई विशेष कार्य करना होता था, कोई फैसला लेना होता था तो घर के सब सदस्यों को इकट्ठा कर सलाह की जाती थी लेकिन आज सोच इतनी बदल गई है कि रिश्तों के मायने ही बदल गए हैं। सब अपने फैसले खुद लेना पसन्द करते हैं। वह अपने फैसलों में किसी की दखल अंदाजी पसन्द नहीं करते।

1.10 अहं

'अहं' संसार की सबसे तुच्छ वस्तु है जो व्यर्थ है। जो भी मनुष्य अहं को संभालकर या संजोकर रखता है,

उसका सर्वस्व नाश हो जाता है। हीन भावना और अहं मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं जो मनुष्य के विकास में बाधक हैं। अहंकार करने वाला मनुष्य दूसरों को नीचा दिखाकर स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। वह अकेला स्वयं ही अपने गुणों का गुणगान करता रहता है। दूसरों की तनिक भी परवाह नहीं करता। अहंकार करने वाला व्यक्ति अपना स्वंय नाश कर लेता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह भी इंसान को पतन की दिशा में ले जाते हैं। उसी प्रकार अहं भी इंसान को दलदल में खड़ा कर देता है। जहां से वह कभी लौटने की कल्पना नहीं कर सकता। वह उसमें धसता जाता है। मनुष्य इतना अहंकारी हो जाता है कि वह अपने रास्ते में आने वाली सारी बाधाओं को मिटा देना चाहता है। अहं में मनुष्य दूसरों का तिरस्कार और अपना हित सोचने लग जाता है। मुक्ता ने अपनी कविता 'मायूसी' में स्पष्ट किया है कि किस प्रकार अहंकार में डूब कर अपने रास्ते में आने वाले हर मनुष्य को कैसे मिटा देना चाहता है–

"हर इंसान बना रहा, एक दूसरे को मोहरा
हटा रहा उसे रास्ते से बाधा समझ
छीन रहा उसका स्वत्व, उसका अधिकार।"

'अहं' में इंसान सब रिश्तों के मायने भूल जाता है। 'अंह' में इंसान इतना अन्धा हो जाता है कि वह अपने माता–पिता, भाई–बहन आदि को भी धोखा देने में नहीं चुकता।

1.11 स्वार्थ

आधुनिक युग में मनुष्य इतना स्वार्थी है कि वह अपने स्वार्थ के लिए सब को धोखा देता है। इंसान अपने लिए इतना स्वार्थी है कि वह अपने सारे कार्य स्वार्थी बन करवा लेता है। उसे जिससे अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है उसकी चापलूसी तक भी करता है। आज प्रत्येक मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगा है। अपने स्वार्थ के लिए वह झूठ बोलता है। दूसरों को धोखा देने में नहीं हिचकिचाता। 'अतीत की स्मृतियाँ' कविता में इसका उदाहरण स्पष्ट है–

"भूल गए सब माता–पिता, भाई बहन
रिश्तों का मूल्य संबंधों की अहमियत
जीवन में रही नहीं
स्वार्थ में वे अंधे हो गए।"

मुक्ता ने बताया है कि इंसान इतना स्वार्थी है कि वह माता–पिता, भाई–बहन सब रिश्तों को भूल गया है। वह अपने स्वार्थ के लिए उनसे रिश्ता तक तोड़ देता है। ऐसे ही कई उदाहरण अन्य कविताओं में स्पष्ट हैं, माता–पिता सारी जिन्दगी बच्चों के लिए कमाते हैं, धन जोड़ते हैं, वही बच्चे बड़े होकर सारी सम्पति अपने नाम करने के लिए माता–पिता से अच्छा व्यवहार करते हैं। जब स्वार्थ पूरा हो जाता है अर्थात जब उनको सब कुछ मिल जाता है तो वह उनकी खबर तक नहीं लेते–

"स्वार्थ
हावी हम पर
मदान्ध हम हो गए हैं
भूल औचित्य के मायने, तज मर्यादा
हम अपनों में भी बेगाने हो गए हैं।"

मुक्ता के कहने का भाव यह है कि इंसान इतना स्वार्थी हो गया है कि वह सब कुछ अपने स्वार्थ के लिए करता है। हम सब पर स्वार्थ हावी है। हम फिर अपने तक ही सीमित हैं। हम स्वार्थ में इतने अन्धे हो गए हैं कि अपनी मान मर्यादा, अपने अस्तित्व को, अपने पारिवारिक जन को भूल उन अपनों में ही बेगाने हो गए हैं क्योंकि हम सब स्वार्थी बन गए हैं।

आधुनिक युग में इंसान स्वार्थ पूरा होने पर अपने माता–पिता तक को घर से निकाल देता है। जब पिता कमाता है तब तक साथ रखते हैं जब वे बुजुर्ग हो जाते हैं तो उन्हें टूटे पहिए की भांति फेंक देते हैं क्योंकि अब वे किसी काम नहीं। 'ओल्ड होम' कविता में स्पष्ट लिखा है–

"क्योंकि आधुनिक युग में
नहीं उनकी जरूरत
वे असमर्थ है
उनका स्वार्थ सिद्ध करने में।"

आधुनिक युग में इंसान के लिए रिश्तों की कोई अहमियत नहीं। वह इतना स्वार्थी की सब रिश्तों को भूल, स्वार्थ सिद्ध करता है। प्रत्येक व्यक्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा अंहवादिता के कारण स्वार्थी होता जा रहा है।

1.12 एकल परिवार

परिवार समाज की लघुत्तम इकाई है। परिवार में ही रह कर बच्चे बड़े होते हैं और अच्छे संस्कार ग्रहण करते हैं। माता–पिता तथा उनके बच्चों को मिला कर परिवार बनता है। जब किसी परिवार को रहने के लिए अच्छा घर, पहनने को कपड़े इत्यादि मिलते हैं वो उस परिवार को सुखी परिवार कहते हैं। जैसे–जैसे मनुष्य आधुनिक होता जा रहा है वैसे–वैसे पारिवारिक समस्याएं बढ़ती जा रही है। पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे।

परिवार के सभी सदस्य इकट्टे रहते थे। जैसे–जैसे मनुष्य व्यवसाय के लिए घर से दूर शहर में जाने लगा धीरे–धीरे वह अपने परिवार को भी लेकर जाने लगा। जिससे एकल परिवार का निर्माण हुआ। आज समाज में एकल परिवार अधिक देखने को मिलते हैं। इंसान अपने परिवार के लिए विदेश जाता है लेकिन वहां जाकर अपनी गृहस्थी को भूल जाता है और वहां अपनी अलग गृहस्थी बना लेता है। वह अपने परिवार की जरा भी चिन्ता नहीं करता जिन्होंने उसे इतना पैसा खर्च करके विदेश भेजा होता है। माता–पिता इंतजार करते रह जाते हैं कि काश कब वे अपने परिवार के साथ मिलकर खुशी–खुशी रहते।

'व्यथित पिता' कविता में इसका अंश प्रस्तुत है–
"वह भी रहता अपने परिवार के साथ,
अपने फूल से बच्चों को खिलाता,
आनन्द मग्न जीवन बिताता
वे दादा–दादा कहते।"

एकल परिवार में बहुत सी समस्याएँ पाई जाती हैं। एकल परिवार में माता–पिता तथा उनके बच्चे ही होते हैं। जब उनके अपने बच्चे अपनी अलग गृहस्थी बना लेते हैं तो माता–पिता अकेले रह जाते हैं। वह अकेलापन महसूस करते हैं। आधुनिक युग में इंसान पारिवारिक रिश्तों से दूर अपना अलग परिवार बना कर रहना पसन्द करता है। आज भी हमारे समाज में एकल परिवार अधिक देखने को मिलते हैं। इसका कारण युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता है। वह माता–पिता के साथ न रहकर अपने अलग घर में रहना चाहता है। इंसान स्वयं इसके लिए दोषी है।

1.13 रिश्तों में टूटन

आज प्रत्येक इंसान आत्म केंद्रित होता जा रहा है। रिश्तों की अहमियत समाप्त हो रही है। चारों ओर अंधविश्वास का वातावरण है। आज स्नेह, ममता, दया, सत्य, करूणा, सहनशीलता सब लुप्त हो गए हैं। बच्चों पर बढ़ता मीडिया का प्रभाव, माता–पिता की व्यस्तता, सुख–सुविधाएं जुटाने की होड़ में फसा इंसान रिश्तों की अहमियत को भूलता जा रहा है। इंसान इंसानियत के मायने भूल चुका हैं आज सब संबंध कलंकित हुए हैं। किसी पर भी विश्वास नहीं। 'मायूसी' कविता में मुक्ता ने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार परिवार टूट रहे हैं। इंसान रिश्तों की अहमियत भूल रहा है। आज सब संबंध कलंकित हो रहे हैं–

"आज कलंकित हुए संबंध
गुरु शिष्य के
पिता–पुत्र के
मां–बेटी के
भाई–बहन के पारस्परिक रिश्ते भी
आज बेमानी हुए
लुप्त हो गया प्रेम व पवित्रता का भाव
भय बढ़ रहा।"

प्रत्येक इंसान पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहा है। वह अपने परिवार को छोड़ अकेला अपना घर बसाना चाहता है। अपने कर्त्तव्य को भूल सुख पाना चाहता है, अपने माता–पिता के प्रति उपेक्षा भाव रखता है। 'पाश्चात्य संस्कृति' कविता की निम्न पंक्तियों में इसका उदाहरण मिलता है–

"बसाना चाहता है अपना
आशियां नया और अलग

परिवार से दूर, कर्तव्य से विमुख,
पाना चाहता सुख।"

आपसी मन मुटाव के कारण भी रिश्तों में बिखराव उत्पन्न होता जा रहा है। आज इंसान का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। उन पर अत्याचार हावी है। मनुष्य मन में कई प्रकार के विरोध रखता है जिसके कारण वह तिल–तिल जलता रहता है ओर आपसी संबंधों को मिटाकर रिश्तों का खून करता है। 'जहर' कविता में इसका उदाहरण देखा जा सकता है–

"ज़हर इंसान को
तिल–तिल जलाता है
कटुता और वैमनस्य का दाता है
संबंधों को मिटाता है
रिश्तों का
खून कर जाता है।"

'बदलते रिश्ते' कविता में भी पारिवारिक टूटन के बारे में बताया है कि किस प्रकार आज रिश्तों के मायने नहीं रहे। रिश्तों की अहमियत नहीं, कोई वजूद नहीं रहा। प्यार, स्नेह सब खो गया है। अपनत्व का भाव भी कहीं खो गया है। एक बेटी ही अपने माता–पिता का कत्ल कर देती है क्योंकि उसका भाई उसे नाजायज औलाद कहता था। उसे मारता–पीटता था। उसने उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की इसलिए सब रिश्तों को भूल उसने उसका भी कत्ल कर दिया। आज सब रिश्ते बदल गए, अहमियत खो बैठे। इसका उदाहरण निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है–

"रिश्ते
बदल गई है इनकी परिभाषा
मायने भी रहे नहीं
आज सब रिश्ते
खो बैठे है अहमियत
वजूद भी उनका रहा नहीं
कहां है रिश्तों की गर्माहट।"

'वह शख्स' कविता में भी बिखरते परिवार का उदाहरण स्पष्ट है कि किस प्रकार एक पति अपनी पत्नी को मारता–पीटता है, पर वह बेटे के रूप में श्रवण कुमार की कामना रखता है और प्रहलाद जैसी भक्ति करता है, परन्तु अपनी पत्नी के प्रति दुष्टता का व्यवहार करता है, उस पर जुल्म करता है। वह अपने परिवार के सदस्यों के पीछे लग अपनी पत्नी को मारता–पीटता है और अपनी गृहस्थी खराब कर लेता है। उसका परिवार बिखर जाता है। इसका उदाहरण निम्न है–

"हैरान हूँ मैं
वह शख्स
जो बेटे के रुप में श्रवण कुमार
भक्ति व दृढ़ता उसमें
प्रहलाद जैसी अपार
परन्तु पत्नी के लिए दुष्ट
भूल सब दायित्व, करता जुल्म निरंतर।"

माता–पिता बच्चें को पढ़ाते–लिखाते हैं और उनका घर बसाते हैं लेकिन बच्चे रिश्तों के रूप ही बदल देते हैं। वह अपने माता–पिता को साथ रखकर खुश नहीं क्योंकि वह अपना अलग घर बनाकर रहना पसंद करते हैं। परिवारिक संबंध टूट रहे हैं। इसका उदाहरण निम्न हैं–

"उसका घर बसाया
आज उसका घर परिवार
उसके बच्चे हैं उसकी धरोहर
नहीं उसे वहां दो गज़ ज़मीन भी मयस्सर।"

पारिवारिक रिश्ते कांच की तरह नाजुक होते हैं। इंसान फिर भी सपने संजोता है। अपने बच्चों से अपेक्षाएं करता है। लेकिन जब बच्चे बड़े हो जाते है तो वह अपना अलग आशियां बसा लेते हैं। सब स्वप्न टूट जाते हैं, सारे रिश्ते टूट जाते हैं। इंसान अकेला रह जाता है। उसका साथ देने वाले उसे धोखा दे जाते हैं। सब रिश्ते नाते तोड़ देते हैं। 'एंकात' कविता में इसका उदाहरण इस प्रकार है–

"आज सब कुछ बदल गया
अपने सब बेग़ाने हो गये
जाने कहां विलुप्त हो गई
आत्मीयता
आज व्याप्त है वहां नीरवता।"

'अतीत की स्मृतियों' कविता की निम्न पंक्तियों में इसका उदाहरण स्पष्ट है कि किस प्रकार रिश्तों की अहमियत भूल गया है। माता–पिता बच्चों को पालते हैं लेकिन चार बच्चे मिलकर एक मां को नहीं पाल सकते। इस तरह मुक्ता ने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार रिश्ते बिखर रहे हैं। उनके लिए माता–पिता को पालना मुश्किल होता है–

"याद आता है उसे
वह है चार बेटों की अभागिन मां
उसने मानी थीं मन्नतें
दुआएं की थी दिन रात
उसकी सलामती के लिए
वे सब बेगाने हो गए।
अपने परिवार के प्यार में खो गए।"

इस प्रकार मुक्ता ने बिखरते परिवार के बहुत से उदाहरण दिए हैं। कहीं पर पत्नी पर पति द्वारा अत्याचार, कहीं पर पत्नी द्वारा नजायत संबंध बनाने से परिवारिक रिश्ते बिखर रहे हैं।

1.14 बेरोज़गारी की समस्या

आज भारत में बहुत–सी समस्याएँ फैली हैं परन्तु उन सब में से बेकारी की समस्या अधिक गम्भीर एवं भयानक है। इस समस्या को सुलझाने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह समस्या आर्थिक योजनाओं के मार्ग में रुकावट है। बेकार व्यक्तियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसमें शिक्षित–अशिक्षित सब बेरोज़गार शामिल हैं। जनसंख्या में वृद्धि के कारण बेरोज़गारी बढ़ती है इसलिए जनसंख्या की वृद्धि को रोकना चाहिए। बेरोज़गारी हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या है। बेरोज़गारी की समस्या का वर्णन 'चिन्ता' कविता की निम्न पंक्तियों में किया गया हैं–

"मातृविहीन, मजबूर, पिता गूंगा
जी रहा था विवशता का जीवन
लाचार, बेरोज़गार भाई
चलाता था रिक्शा
कभी मज़दूरी कर
जीवन–यापन कर रहा था अपना।"

किस प्रकार बेरोजगार अपना जीवन यापन करते हैं। कभी रिक्शा चलाकर, कभी मजदूरी कर अपना जीवन व्यतीत करता है। बेरोज़गार होने के कारण वह बड़ी मुश्किल से अपनी बहन की शादी करते हैं लेकिन वह उसे दहेज में कुछ न दे सके क्योंकि वे बेरोज़गार थे। इस प्रकार मुक्ता ने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार बेरोजगारी इंसान को लाचार बना देती है।

बेरोज़गार इंसान इतना लाचार हो जाता है कि वह अपने बच्चों को न तो शिक्षा प्रदान कर सकता है और न ही अच्छे से अपना गुजारा कर सकता है।

1.15 मानवीय मूल्यों का विघटन

आधुनिक समाज में मनुष्य अपनी सभ्यता, संस्कृति को भूलता जा रहा है। उसमें मूल्यों का विघटन हो रहा है। बड़ों का आदर–सम्मान आदि सब भूल रहा है। वह अपने तक ही सीमित है। एक तरह हम श्रवण जैसे पुत्र का गुणगान

सुनते हैं जो अंधे माता–पिता को बहगी में बिठाकर तीर्थ यात्रा करवाने ले गया था। लेकिन आज के पुत्र माता–पिता को साथ तक नहीं रखते, उनका आदर–सम्मान तक नहीं करते। उस समय राम की बात करते हैं जिसने सौतली मां के वचन रखने के लिए चौदह वर्ष का बनवास काटा लेकिन आज अपने स्वार्थ के लिए लोग झूठ बोलते हैं, अपनी बात से फिर जाते हैं। ऐसी महिलाएं तो अनगिनत हैं जिन्होंने परिवार और बच्चों को बचाने के लिए प्राणों की आहुति दे दी लेकिन आज समाज में घट रही घटनाओं को देखते हुए ऐसा लगता है जैसे ये आदर्श और मानव जीवन मूल्य कूड़े–कर्कट के ढेर की तरह उस सफाई कर्मचारी का इन्तजार कर रहे हैं जो उन्हें एक गड्ढे में डालकर आग लगा देगा।

'टूटते संबंध' कविता में मुक्ता ने मानवीय मूल्यों के विघटन का उदाहरण प्रस्तुत किया है–

"लगता है
दुनिया से अंत हो गया
इंसानियत का
हावी हुई हैवानियत
दहन हुआ मानव मूल्यों का टूटते संबंधों को देख
लगता है खून सफेद हो गया, आजकल इंसान का।"

मुक्ता ने स्पष्ट किया है कि आज भाई–भाई का दुश्मन हो गया। चारों तरफ आतंक फैला हुआ है। हर इंसान में, समाज में चारों तरफ हाहाकार मच रहा है। इंसान वेश बदल कर, एक दूसरे को धोखा दे रहा है। इस जहान में इंसानियत का अंत हो गया है। आज का इंसान इतना स्वार्थी है कि वह अपने माता–पिता को भी साथ नहीं रखना चाहता। पहले माता–पिता का आदर किया जाता था। उनकी आज्ञा का पालन किया जाता था लेकिन आज के युग में मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा है। बच्चे माता–पिता का किसी भी तरह का हस्तक्षेप नहीं चाहते। इसका उदाहरण 'निरंकुशता' कविता में इस प्रकार है–

"पाकर पत्नी का संग
बना अलग आशियां
जीता है स्वतंत्र जीवन
चाहता नहीं वह
हस्तक्षेप किसी का
निकाल देता है
माता–पिता को
घर–प्रांगण से
जो कभी था आशियां उनका।"

ऐसा ही उदाहरण 'माँ' कविता में स्पष्ट है कि किस प्रकार एक बेटा अपने कर्तव्य को भूल अपने दायित्व को भूल अपना अलग आशियां वसा लेता है। जहां उन दोनों कि सिवाय तीसरे का स्थान नहीं–

"भुला देता है
वह अपने कर्त्तव्य को
अपने दायित्व को
बसा लेता है अलग
एक नया आशियां
जहां हम दो के सिवाय
तीसरे का नहीं स्थान
तोड़ देता है वह बंधन
मातृ स्नेह का।"

इस प्रकार मुक्ता ने मानवीय मूल्यों के विघटन का अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है कि किस प्रकार इंसान अपने मूल्यों को भूल स्वार्थी बन अपना जीवन व्यतीत करता है।

1.16 निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुक्ता एक कुशल कवयित्री होने के साथ–साथ एक प्रखर चिंतक भी हैं।

मुक्ता ने अपनी कविताओं में संस्कृति के समकालीन चिन्तन बिन्दुओं का सजगता से वर्णन किया है। इन्होंने समाज में फैले बैर–विरोध और सामाजिक विसंगतियों के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है। इन्होंने अपने काव्य में जिन्दगी की अटल सच्चाईयों को यथार्थपूर्ण ढंग से अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इन्होंने कविताओं के माध्यम से लोगों को उस परिवेश से अवगत करवाया है जो आज चारों ओर व्याप्त है। मुक्ता ने भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बेरोज़गारी, जैनरेशन गैप, नारी विषयक आदि समस्याओं का अपने काव्य में वर्णन किया है।

संदर्भ

[1]एक आंसू, मुक्ता, (नई दिल्लीः सूर्यप्रभा प्रकाशन, 2009), पृष्ठ 75
[2]वही, पृष्ठ 71
[3]वही, पृष्ठ 20
[4]वही, पृष्ठ 19
[5]वही, पृष्ठ 27
[6]वही, पृष्ठ 40
[7]वही, पृष्ठ 16
[8]वही, पृष्ठ 42
[9]वही, पृष्ठ 33
[10]वही, पृष्ठ 18
[11]वही, पृष्ठ 26.
[12]वही, पृष्ठ 30.
[13]वही, पृष्ठ 42.
[14]वही, पृष्ठ 91.
[15]वही, पृष्ठ 30.
[16]वही, पृष्ठ 41.
[17]वही, पृष्ठ 18
[18]वही, पृष्ठ 48
[19]वही, पृष्ठ 44
[20]वही, पृष्ठ 101
[21]वही, पृष्ठ 13
[22]वही, पृष्ठ 41
[23]वही, पृष्ठ 114
[24]वही, पृष्ठ 13
[25]वही, पृष्ठ 63
[26]वही, पृष्ठ 20.
[27]वही, पृष्ठ 33
[28]वही, पृष्ठ 114
[29]वही, पृष्ठ 112
[30]वही, पृष्ठ 104
[31]वही, पृष्ठ 101
[32]वही, पृष्ठ 62
[33]वही, पृष्ठ 50
[34]वही, पृष्ठ 27
[35]वही, पृष्ठ 13
[36]वही, पृष्ठ 96
[37]वही, पृष्ठ 79
[38]वही, पृष्ठ 65
[39]वही, पृष्ठ 59

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net